चाय चक्कर

[कुमाऊंनी कविता में]

लेखक : भैरब दत्त सुयाल 'सेवक'

कुमाऊनी साहित्य सदन
चौरासी घण्टा बाजार सीताराम,दिल्ली-६

प्रथम संस्करण १०००] मार्च १९८० [मूल्य Rs 10-00

चाय चक्कर

[कुमाऊंनी कविता में]

लेखक :
श्री भैरव दत्त सुयाल 'सेवक'
सुयाल साहित्य सेवा सदन
सुयालबाड़ी, नैनीताल (उ० प्र०)

प्रकाशक :
कुमाऊंनी साहित्य सदन
चौरासी घण्टा बाजार सीताराम,
दिल्ली-११०००६

द्वितीय संस्करण १०००] १९८० [मूल्य 10-00

प्रकाशकीय

श्री भैरव दत्त सुयाल जी द्वारा रचित 'चाय चक्कर' नामक पुस्तक :

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाव भवेत् ।।'

अर्थात सब सुखी और निरोग हों, सभी भद्रता का दर्शन करें और कोई दुख का भागी न हो की भद्र भावना से प्रेरित होकर द्वितीय बार प्रकाशित की जा रही है।

प्रस्तुत पुस्तक में चाय से होने वाली सभी प्रकार की बुराइयों को बड़े रोचक ढंग से वर्णित कर वर्तमान पीढ़ी को सजग रहने के लिए संकेत किया गया है।

पुस्तक कुमाऊंनी बोल चाल की भाषा में बड़े परिश्रम पूर्वक लिखी गई है, ताकि जन साधारण को समझने में कोई कठिनाई न हो। आधुनिक सभ्य कहे जाने वाले समाज में व्यक्ति चाय जैसी तुच्छ वस्तु का सहारा लेकर अपने अनैतिक आचरण से पतन की ओर जा रहा हैं। अतः इस पतन से उत्थान की ओर पग बढ़ाने के अभिलाषी पाठकों के लिए ऐसी पुस्तक की विशेष उपयोगिता है।

ऐसा विश्वास है कि पाठक गण इस पुस्तक के अध्ययन से 'चाय चक्कर' की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए स्वयं उक्त चक्कर से मुक्त होकर अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में एक आदर्श की स्थापना करेंगे।

देवीदत्त तिवारी एम. ए., बी. एड.
उ० मा० विद्यालय ढोकाने
(जिला नैनीताल)

चाय के मुक्तक

सिद्ध मुनी जो कह गए, जग में चक्कर चार।
काम क्रोध मद लोभ ये, सब ग्रन्थन को सार॥
सब ग्रन्थन को सार, बदल गई परिभाषा।
अब है चक्कर चाय का, सुन्दर सब के पासा॥

इस दुनिया में देख लो, कई तरह के इन्सान।
ऊंच नीच छोटा बड़ा, है सबसे भगवान॥
है सबसे भगवान, छुड़ावें दुख के फन्दे।
प्याला भर इक चाय का, चढ़ा कर बाँधले बंदे॥

धर्म कर्म धन दान से, खुलें मोक्ष के द्वार।
सत युग द्वापर में यही, त्रेता रहे विचार॥
त्रेता रहे विचार, कलि युग में वह दानी।
पीये और पिलाय जो, चायामृत का पानी॥

चाके नेकों नाम हैं, और अनेकों हैं रंग।
बिगड़ी बात बनाय दे, अथवा होवे गम॥
अथवा होवे गम, पीलो ठण्डी चाय।
मंत्र जपो इस नाम का, शत्रु मित्र हो जाय॥

कुमाऊंनी साहित्य मुदक, बाजार सीता राम दिल्ली-६

अपनी बात

कोन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यः शृणोति न हितानि ।
को मूकायः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति

(अन्धा कौन ? जो अकार्य करने में लगा है। बहरा कौन ? जो हित की बात नहीं सुनता। गूंगा कौन ? जो समय पर प्रिय शब्द बोलना नहीं जानता है।)

प्रिय पाठक बन्धु,

प्रस्तुत पुस्तक मात्र कल्पना पर ही नहीं अपितु कुछ तथ्य एवं सत्य अनुभूति पर ही आधारित है। अतः यह कहना आवश्यक है कि पुस्तकाध्ययन मात्र मनोरंजन की दृष्टि से ही नहीं बल्कि गम्भीरता से ही किए जाने पर यत्र-तत्र-सर्वत्र इस संक्रामक चाय का प्रत्यक्ष दर्शन हो सकेगा।

जिस विकृत रूप में आज हमारे समाज को इस चाय ने अपने 'मुरब्बा' प्रयत्न के द्वारा उदरस्थ करने की ठानी है, उसे देखते हुए यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि दिन प्रतिदिन इसके परिणाम अनिष्ट कारक हो सकते हैं। भले ही कुछ महानुभावों को वर्तमान में यह कथन उपहासास्पद क्यों न प्रतीत हो।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस विषय में सोचें और समझें तथा चाय की पृष्ठभूमि में पनपने वाले अनाचार व दुराचारों को रोकें, जिससे समाज पतन की ओर न जा सके। अब तक हमारे कई कुर्माचलीय बन्धुओं ने इस विषय में लिखने का प्रयास किया है किंतु केवल मनोरंजन की दृष्टि से। अस्तु, इन्हीं कई कारणों से प्रेरित होकर मैंने भी अपनी ओर से हास्य रस की पुट सहित चाय के विभिन्न रूप, गुण व दोष तथा व्यक्तिगत एवं समाजिक हानि आदि को इस पुस्तक द्वारा मूर्तित करने का प्रयत्न किया

है। प्रयास कहाँ तक सफल रहा यह मैं नहीं बल्कि 'कवि करोति काव्यानि, रसानि जानत् पण्डित:' के अनुसार आप स्वयं ही कहने का कष्ट करेंगे।

अपने कूर्मांचलीय समाज में इस चाय का और भी बुरी तरह प्रचलन बढ़ जाने के कारण रचना अपनी मातृभाषा पर्वतीय में लिखी गई है। इसलिए भाषा, व्याकरण छन्दादि नियमों का उलंघन तो हुआ ही है, साथ ही साथ शब्द तथा वाक्यों को भी तोड़ मरोड़ कर लिखा गया है। यथा श्री के स्थान पर 'सिरी', कृपा 'किरपा' हाथ 'हात' अमृत 'अमीरत' आदि।

क्योंकि बोलचाल की अपनी पर्वतीय भाषा को छन्दमय बनाने में यह आवश्यक हो गया था, ताकि पढ़ने में सरलता और गायक की लय (तर्ज) में कहीं अवरोध न हो सके।

अतएव इस अपराध के लिए मैं विद्वान तथा साहित्यिक जनों से करबद्ध क्षमा याचना सहित पाठकों से निवेदन करूंगा कि वे पढ़ते समय स्वर, व्यंजन शब्द व वाक्य तथा मात्राओं का लिखे अनुसार ही उच्चारण करें, ताकि पढ़ने सुनने में सरलता का वातावरण बन सके। जय हिन्द।

भैरव दत्त सुयाल 'सेवक'

सोमवार २६ मार्च १९७३, शक सम्वत १८९५

तथ्य एवं सत्य

श्री भैरव दत्त सुयाल जी द्वारा स्वरचित 'चाय चक्कर' पुस्तक को पढ़ने का सौभाग्य मिला। जिसको पढ़ने के उपरान्त वर्तमान समाज में प्रसारित होने वाले इस संक्रामक चाय के विषय में अनेक बातों का अध्ययन करने को मिला। श्री सुयाल जी ने अपनी पुस्तक का प्रकाशन कुमाउंनी भाषा में लिखकर तथा कविता का सरल एवं सुबोध बनाकर अनपढ़ समाज तक अपनी कविता का प्रसार करने का पूर्ण प्रयत्न किया है। अतः इनका यह प्रयत्न सराहनीय है।

आपकी रचना में वर्तमान समाज में निरन्तर वृद्धि होने वाले इस चाय के कुछ वास्तविक तथ्यों एवं सत्य अनुभूति की झलक मिलती है। सुयाल जी ने ग्रामीण वातावरण में भी लोकप्रिय होने वाले इस पेय पदार्थ के सम्बन्ध में अधिक से अधिक पारिवारिक समस्याओं का गहन अध्ययन करते हुए अपनी पुस्तक की भाषा को सरल, सरस एवं भावपूर्ण बनाने का प्रयास किया है ताकि अधिक से अधिक जन समुदाय उनकी इस कविता का आनन्द लेकर इस विषय की वास्तविकता को समझ कर सकें। एक सामान्य पेय पदार्थ जिसका उपयोग समाज में निरन्तर बढ़ रहा है तथा जिसके बल पर मानव नैतिक व अनैतिक भावनाओं को पहचानने में ससमर्थ रह जाता है साथ ही जिसका प्रभाव वर्तमान समय में एक गरीब परिवार से लेकर सर्व सम्पन्न परिवार एवं समूचे राष्ट्र में कितना बढ़ रहा है इसकी पुष्टि आपकी रचना से स्पष्ट है आप ने अपनी कविता में प्राचीन समय की जन इच्छा का आदर सत्कार एवं व्यवहार की तुलना वर्तमान समाज में अतिथ्य सत्कार एवं व्यवहार कौशल से भी की हैं जिससे स्पष्ट हैं कि हमारा समाज किस ओर बढ़ रहा है।

मानव की आवश्यकताएं अनंत और असीमित हैं। परन्तु आत्म संयम और आत्म संतोंष सबसे बड़ा साधन है। श्री सुयाल जी की यह कुमाऊंनी कविता हास्य प्रद होने के साथ ही साथ रोचक एवं शिक्षा प्रद भी है। प्रस्तुत पुस्तक में आपने चाय के सभी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक पहलुओं का स्पष्ट उल्लेख किया है निर्धन ग्रामीण जनता इस पेय पदार्थ की पूर्ति के लिए कितनी यातनाएं उठाती है इसकी अनुभूति भी पाठकगण आपकी कविता की कुछ पंक्तियों से स्वयं कर सकते हैं। यदि इस पुस्तक की वास्तविकाता को जनसाधारण समझने लगे तो निस्संदेह हमारा समाज इस चाय चक्कर से विमुक्त होकर अपने जीवन को आदर्श एवं सुखमय बना सकता है।

अनंतात: मुझे यह कहते हुए हर्ष है कि श्री सुयाल जी की इस सरल रचना से मानव समाज को अवश्य प्रेरणा मिलेगी तथा वे अपनी इस आदर्श रचना के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

विनीत :

डा० लोकमणी पाण्डे प्रवक्ता
रा. इ. का. ठोकाने, नैनीताल

गंगा दशहरा
५ जून १९७९

'कीरति भनिति भूति भल सोई ।'

सौभाग्यवस श्री भैरव दत्त सुयाल 'सेवक' जी द्वारा रचित "चाय चक्कर" को पढ़ने का सुअवसर मिला । प्रस्तुत पुस्तक में उन्होंने जिस रोचक व सरस ढंग से एक ओर सभी वर्ग व समाज के स्वास्थ्य समय व धनादि की हानि का उल्लेख किया है उसी प्रकार दूसरे शब्दों में जन हित की दृष्टि से भावी संतान के सुधार के लिए सामाजिक भेदभाव का विरोध समाज के अधिकांश स्तरों में फैले हुए भ्रष्टाचार तथा नकल की आदत पर जो गहरा तीव्र व्यंग कसा है उसे पढ़कर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो प्रभावित न हो । मैं तो वास्तव में अत्याधिक प्रभावित हुआ ।

इस कारण मुझे आशा सहित विश्वास है कि विशेषत: कुमाऊंनी लोग इस पुस्तक में अधिकाधिक लाभ उठाने के लिए इसका व्यापक प्रचार व प्रसार भी करेंगे ।

क्योंकि जनहित के लिए कूट कूट कर भरी गई इस पुस्तक की सारी बातें उनके अपार श्रम का द्योतक है । जिस हेतु उन्हें धन्यवाद दिए बिना बातअपूर्ण सी लगती है । वह इसलिए कि :—

'कीरति भनिति भूति भल सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई ।।

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी की इस चौपाई में आये हुए शब्द 'भानिति' श्री सुयाल जी की इस रचना में प्रत्यक्ष चरितार्थ प्रतीत होती है । ऐसा मैं निसंकोच कह सकता हूं ।

अत: ऐसे 'सुकवि' की सफलता के लिए मैं उस सर्व शक्तिमान जगत नियन्ता, जगदीश्वर और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्हें तथा उनकी रचना को धन्यवाद देता हूं । किन्तु–

'यालोक द्वय तारिणीचतुरता, सा चातुरी सा चातुरी ।'

(चतुर वही माना जाता है जो दोनों लोको को सुधारे ।) इस दृष्टि से प्रस्तुत पुस्तक में 'अध्यात्मिक चाय' के प्रकरण का अभाव खटकता है । लेकिन ऐसी आशा है कि कवि हृदय श्री सुयाल जी अगले संस्करण के प्रकाशन तक इस प्रकरण की भी रचना कर लेंगे, ताकि अध्यात्म ज्ञानी भी इसे रुचि पूर्वक पढ़ें और चाय प्रयोग से उन्हें भी जो हानि होती है । (मन की अस्थिरता, बुद्धि का दूषित होना भावना का कलुषित होना आदि) उसे समझें ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी, जगन्नाथ सभापति

२१ अक्तूबर १९७३ ग्राम सभा अम्दौ (नैनीताल]

शुभ कामना

श्री भैरव दत्त सुयाल जी की रचना 'चाय चक्कर' को मैंने यत्र तत्र पढ़ा। मङ्गलाचरण से प्रारम्भ कर तान्त्रिक देवता की भांति आपने चाय को देवता का रूपक दिया है। पर्वतीय ग्रामों में इस देवता के प्रभाव से उत्पन्न हानियों को देखकर, विकल होकर ही, आपने पर्वतीय भाषा में, छन्दोबद्ध इस देवता के कलुषित महात्म्य का वर्णन किया है। चुड़ैल एवं शैतान की भांति इस देवता से छुटकारा पाने के लिए, अन्त में चाय देवता की आरती तथा प्रार्थना की है। पुस्तक का चाय चक्कर नाम यथार्थ है। इस उक्त भावना से प्रेरित आपकी रचना सराहनीय है। मेरी शुभ कामनाएं आपके साथ है।

आचार्य नरोत्तम पाण्डेय एम० ए०
प्रवक्ता शिलौटी नौकुचियाताल (नैनीताल)

पुस्तक के विषय में

श्री भैरव दत्त सुयाल जी द्वारा लिखित 'चाय चक्कर' पुस्तक को देखने का सौभाग्य मिला। समाज को सुधारने एवं भावी पीढ़ी को सजग करने के लिए इस कविता की रचना अपना विशेष स्थान बनाएगी ऐसी मुझे आशा है। हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में अन्य स्थानों से कहीं अधिक चाय का प्रचलन है, तथा हमारे यहां के लोगों को चाय से होने वाली हानियों का प्रायः काफी सामना करना पड़ता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कविता आम जनता को चाय के चक्कर में पड़ने से बचाएगी।

श्री सुयाल जी ने निःसन्देह इस पुस्तक को काफी सरल और सुन्दर भाषा में लिखा है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि जिस उद्देश्य से आपने इस कविता की रचना की हैं उसमें आपको सफलता मिले।

बी० डी० शर्मा
जिला सूचना एवं सहायक
स्वास्थ्य अधिकारीनैनीताल

शुभ कामनाएं

मुझे श्री भैरव दत्त सुयाल की कुमाउंनी भाषा में लिखी गई यह रचना देखने का अवसर मिला। उन्होंने रोचक शैली में चाय से होने वाली हानि की ओर ध्यान दिलाया है। कवि के अनुसार इससे स्वास्थ्य को तो नुकसान पहुंचता ही है आर्थिक रूप से भी यह उचित नहीं है कि लोग चाय के चक्कर में रहें।

कवि के अनुसार इस प्रकार के पेय का चलन विदेशी सरकार के आगमन और हम लोगों के उनकी नकल करने की आदत का परिणाम है। इन्होंने सहज भाषा में एक प्रकार से अपने मन में समाई हुई समाज सुधार की भावनाओं को बहुत अच्छी प्रकार से व्यक्त किया है।

डा० नारायण दत्त पालीवाल

अवर सचिव [भाषा] दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

प्रस्तुत पुस्तक में श्री भैरव दत्त सुयाल ज्यूल् सरल बोल - चाल भाषा मजी स्वाभाविक प्रसंगनी वास्तविक चित्रण करणां सफल प्रयास करी। चहाल् के के नुकसान हुं मी बात शलगलै करी जाव, तब लग पुस्तक में वास्तविक चित्रण और हास्य व्यग्यै पुट तथा उचित शब्दनी प्रयोग बड़ स्वाभाविक ढंगैल करी छ।

मैं कणि उम्मीद छ कि यो पुस्तक पाठकन कणि पसन्द आलि और अपणि मातृ भाषा पुस्तक कणि पढ़णै तथा वीकि उन्नति करणै रुचि पैद करील।

आनन्द बल्लभ अप्रेती

प्रो० शक्ति प्रेस, हलद्वानी

श्री भैरब दत्त सुयाल जी ने 'चाय चक्कर' नामक पुस्तिका में समाज को वास्तविकता अपने सुन्दर चतुर्वर्णिक काव्य के माध्यम से प्रदर्शित की है। उन्होंने समाज को शब्द वाण, व्यंग वाण हास्य के रूप में दिया है। मैं आशा करता हूं कि जनता इनकी रचना की आदर करेगी इतनी आशा के साथ ही पूर्ण विश्वास है। मेरी शुभकामना इनके साथ है।

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

व्यवस्थापक : कुमाऊंनी साहित्य मुदक

बाजार सीताराम दिल्ली-६

ईश वंदना

जगत्स्थित्यलयोद् भूतिहेतवे निखिलात्मने ।
सच्चिदानन्द रुपाय परस्मे ब्रह्मणे नमः ॥

(संसार की उत्पत्ति, स्थिति और लय के कारण तथा सबके आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप परमब्रह्म को नमस्कार है :)

सिरी गुरु चरणों में, धरी बेर ध्यान ।
गणेशा ज्यू दया करा, किरपा निधान ॥
सारस्वती माई तुम, है जया दयाल ।
वाणी मज बैठी बेर भल दिया ख्याल ॥

कुल देव पितरों कैं, करनू प्रणाम ।
पंच नाम देव सब, सुमिरन आज ॥
सब देव दैण ह्वोया, देवों का ले देव ।
नारायण हरि तुम, गोविन्द केशव ॥

सुमिरन करी तुमू, चरणों में शीश ।
झुकै बेर विनती छ, ईश्वर जगदीश ॥
तुमर सेवक प्रभू, तुमरो छौं दास ।
तुमरी छ सब माया, तुमरी छ आस ॥

तुमरो चें वरदान, तुम महादानी ।
काम क्रोध मद लोभ, मैं बड़ अज्ञानी ।
जड़ छौं मूरख महां, तुमरी हो दाया ।
आपण सेवक मांथी, करी दिया छाया ॥

तुमरो स्वभाव स्वामी, सबू हितकर ।
आंख्यानेर जाणना छैं, मैं न्हैतें अकल ॥
मैं जसा ने अकला का, हाथ मां कलमा ।
किलै दीछ तुमीं जांण, प्यारा भगवाना ॥

कलमा को गुण दोष, नक भल सब ।
पर पणा तुमन कैं, यश-अपयश ॥
मनै कैं करनूं शिवा, आखर लेखनूं ।
आपणां तरफा बटी, जस मैं देखनूं ॥

प्रस्तावना

गौं-गौंनों की नौकरी मा, घर-घर काम ।
रुजुग छ योई मेरो, सबों राम - राम ॥
जिन्दगी का दिन गया, ये सिर्फ चालीस ।
बरस लै पूरा भया नौकरी मा बीस ॥

देखनै फिरनै भाई, पहाड़ भावर ।
तराई मैं जाड़ नक, लागों झरझर ॥
हलद्वानी बै तलिणा कै, कौनी सब देश ।
बरेली लै खूब घूमी, देखी छ मेरठ ॥

मेरठ बै नजदीग दिल्ली क नगर ।
राजधानी हमरी वां, पहल - पहल ॥

लखनऊ नगर में आजी छै नवाब ।
मथुरा में पण्ड यखा बड़ा हो खराब ।।

पिरयाग पितरों क, मस हूं सराद ।
हाई कोर्ट देखी आयों, जां इलाहाबाद ।।
रुड़की शहर देखा, मिलेटरी कैन्ट ।
लुकसर बटी पड़ों, रेल मजी बैंड ।।

हरिद्वार अचानक गयों ऋषिकेश ।
देश छ अलम पर. भेष सब एक ।।
कतु जागा आजी देखी, लेखरा बेकार ।
मतलब यो समजा, खूब घुमा स्यार ।।

सब जागा नाना ठुला, सैंणी मैंस सब ।
अवा बैठा कौनी सब, सुणाओ हो गप ।।
बाब सैंप महाराज, कवे पंडिज्यू कौनी ।
सेवक ज्यू गुरु और रिस्ता लै लगौनी ।।

फिर, दरी चुटका लै, कवे कालीन कुर्सी ।
बैठूं कुर्षी लगै दीनी, झट-पट फुर्ति ।।
कथैं-कथै बिछै दीनो, वॉणों बुणी खाट ।
पलंग नीवाड़ा भली, कतु जागा टाट ।।

कामव लै भल दींछ, कथैं-कथैं काम ।
बोरिया लै नी भै कांई हाई राम-राम ।।
मजबूरी कतु जागा, कवे ली औनी चौक ।
बैठी जाजू मैले तब, जस भस मौक ।।

उनर सनेह देखी, पुछन् कुशल ।
के है रई हाल-चाल, कसी छ फसल ॥
बाच सैप सुणौंनू हो, भली बैठो जसा ।
बवे नाना थें धग कुनी, बवे आपूई गया ॥

नी पिन नी पिन कनू सुणनै नहैं तन ।
चहा देखी बेर म्यर, उदेखी जा मन ॥
हरगिज नी मानना, गरीब अमीर ।
कतुक कै दिया तुम, चहा खातीर ॥

काल गूड़ कोठ्यारी, जारमें कि मेली ।
चीनी लै मीसिरि म्हैतै, थोई मली होली ॥
गरीब - गरीब कौंनी, मैं गरीब मयो ।
तब कौहा मैं नि पिन दात बांधी छयो ॥

निरुत्तर है जानू, पीय चुप - चाप ।
सेठ लोग यस कौनी, कन पिया आब ॥
जरा सा ल लाई रयौ, घखा य गिलास ।
मैं थे कया केई अब, हे जाल बीकार ॥

जै थैं कनू नी सुणना, बड़ी हैं आफत ।
दिनमान चार-पांच, सेरों क हिसाब ॥
मन में ऊदासी भौत, ये चहा कैं देखी ।
भुक उठी गेइ तब, यो किताब लेखि ॥

लेखथा में त्रुटि होली, भौत जागा मेरी ।
अरथा के समझिया, मैं न्हैंतन कवि ॥

झूठी-साँची बखी छ य, करिया विचार ।
उपर बढ़र दिया, दस पैसा कार्ड ॥

आपर्धि याद लै सब, साँच कौनू हाल ।
फिर लग गलती को, मनुष्य स्वभाव ॥
कतु किस्सा भूखी गयों, बरसों की बात ।
थोड़ी मौत लेखना छों, जा छै ठीक याद ॥

एक नामा कतु हुनी, नर औ नारी ।
आपूं मली नी बटाया, पढ़नेर भाई ॥
तब लग कोई शंका, ऐ जाली मनमा ।
पत्र लै आपणा भाई, लेखों यो कलम ॥

भैरव छ नाम म्यर, सुयाल छ जात ।
गौं क नाम सुँयैबाड़ी, डाक खास खास ॥
पट्टी लै सुयालबाड़ो, जिला नैनीताल ।
मिलिया छ मोटरै की, सड़क लै पास ॥

किताबा कै मेरी लोगो, हँसणो साधन ।
समजिया झन कोई, लगे बेर मन ॥
मनै लै पढ़ला तब, समजला बात ।
सबन है पैली करा, स्तोतर याद ॥

चाय स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री चाय गरम नामा स्तोत्र मन्त्रस्य लिपटन ऋषि केतली छन्द अग्निदेता ब्रुक बौन्ड बीजम मेथी-ज्वाणा जीरा-धनियां बनाड़ादि देवता स्त्वत्तम श्री चाय प्रीत्यर्थे पय शर्कर गुड़ादि मिश्रणे गिलास रूपे विनियोगः ।

। बखतो उवाच ॥

बखत लै हाथ जोड़ा, नकला आपिन ।
कवा गुरू यस मन्त्र, सबै जपी लिन ॥
हितकारी सबू नक, समर्थानुसार ।
फल मिली ज्ञान झट, हैजा बार-पार ॥

॥ नकलो उवाच ॥

बड़ी भली पूछी त्वीलै, हे बखमा सुंण ।
यहा मन्त्र बतै दिनू, और चीका गुण ॥
लिपटन ब्रुक बौन्ड, दार्जिलिंग चीच ।
विषनाशै जोरदार, पुराण बणीच ।
रैड ऐलो लेबिल टो, अंग्रेजी नाम ।
लाल पिल कागज कों, यहा तै कै बांण ॥
कुमावनी नाम सुंण, जो छना सरल ।
झट-पट ऐई जानी आफी मन-मन ॥

चाय ध्यहा चा मैं कीजो, कनु कोन चहा ।
तात पांखी फिक पांखी, कटकी को अहा ॥
मेथी लौंगा काली मिर्च, अदरख आजी ।
जीरा है चकीया मली चहा बड़ नामी ॥

तुलसी का पत्तो कभी, पाणी में ऊमाखी ।
दबमोली पात लग, नी भैया खाखी ॥
कौफो हैंब मीत बड़ी, बनाक भूटिया ।
समर्थ तुमार तुम, प्रेमे ली ब पिया ॥

स्तोतर रात्ति ध्याल, जो लग पढ़ला ।
ते का घर औंश पौंश खूब बरसला ॥

दुपरी मध्यान रात, हर घड़ी मजा ।
जो अपल ध्यान लगे, ते के नी हो सजा ॥

मार फौजदारी सब, हैंई आनी माफ ।
नाना ठुला ऐप सब, चुटकी में साफ ॥
सेकी भैंस ध्यल पेली, हे आनी बसमा ।
जैल जप यो स्तोत्र, लगे बेर मन ॥

नकला ली यो स्तोत्र, बखता खु कयो ।
सबू नौक हित सोची, मैंले लेखी दियो ॥

॥ इति चाय गरम स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

चाय पात्र

आगा छुना कतु फुटा यो, चहा असार ।
पड़े गया सावन का, लवकिया भ्वार ।।
कितली देलिक चेंछ, पाचा सेर पूरी ।
कांणू हुणी छलनी लै भौत हो जरूरी ।
लोटिया लै भली चेंछ, कलई गिलास ।
फेंट फाट करना हूँ, लुवे की सन्यास ।।
अदपुरी विद्या हैंछ, जियड़ी की काव ।
कौंचा का गीलास लग, लै ई रई डाव ।।
चमकनी चमचा चें कप और प्लेट ।
समयानुसार चैंछ, के मस्त टी सैट ।।
बाव सैर बड़ना में, थरमस चैंछ ।
गरीबों की चहा गुंणा, कमिक पार्केछ ।।
तिलुवा की तौलो भलो, कीतली में टूबट ।
थकुली में हेई छेंछ, चहा स्वट स्वट ।।
मौनिया भयोई मजा, चहा पकै लीछ ।
पनिया क फुट फरू, अब चहा पीछ ।।
जई दस सांटी बेर, यक रुपया डेग ।
चहा पीनी ब्याल मजो काम औं अनेक ।।
पदिया कि भलि मली, पुराणीछ घंटी ।
लोकिया लै करी हाला, सात लोटी ठंडी ।।

मनुवां लै वेचो दीछ, पितवै पतेली ।
कम वाँकी करी आई जमते कीतेली ।।
गगैवी कैं आग लागो, नान मो हरुवा ।
चहा पीवा वेर त्री ओं, छीस क करुवा ।।

चाय के प्रेरक

भारत का देश जब, अंगरेज अया ।
ऐकलु बानरा जसा, चाहा सिकै गया ।।
सब देश सीकि गयो, तनरी नकल ।
नकला करना सूं लैं, भली चें अकल ।।
ऊंत पीछी चहा भाई, आपशा टैमलै ।
दूद चीनी गड बड, पत्ती लै ढदेलै ।।
दगड़ा में खानछिया, बिसकुट म्यवा ।
आमलेट टोस्ट और, मक्खन का डावा ।।
फल-फूल रुतु खाछी, आम स्यवा दाँखा ।
हमन कैं दुरलभ, हैई रई चांखा ।।
मरिजया अंगरेजौं' बीति जाला तुम ।
भारतै कै बड़ै गया, विलैत को दुम ।।
अखण्ड भारता खन्ड, करी बेर पाक ।
बड़े भया जान ताक, आपूं बचा साफ ।।

बैर बीज बोई गया, देश भजी खाम।
बढ़ै गया घर घर, चुथरौब जाम॥
कलम रुकरा लै ै, यनुक कै बेर।
गलत नी ल्यखो कैंछ, आंखर मैं एक॥
सांचो बात कलम यो, याद दिलै गेई।
यक हाथा कमै लग नि बजनी ताई॥
सब दोष अंगरेजों, दीण महा पाप।
घरों घर हाम लग, सबै छां नवाब।
को मानछ को सुणछ, कैकी नकी भली।
घरै चीनी तिति लागे, स्यैर मिठी भेली॥
फुट पड़ी जती उती, दुशमणों चलि।
कैंई खग देखि लिया, योई बात होलि॥
मेल करी देखी लिया, कस हुँछ खेल।
जनमि गा पोर बेर, बाङला क देश॥
नकला का उस्ताद, चुगलिया खोर।
हाम लग कम न्हैंतों, उनरै के दोष॥
के ले करी अंगरेजों, के लक ईसाई।
कै लैं करी चीनियां की, कै पारसी भाई॥
बुलगानिन कट धरि कतुकां लै दाड़ी।
भारतै की संस्कृति, शान सब मरी॥
सभ्यता का नाम पर, और बांकी बड़ी॥
हमरा भारता मजी, नकला के चली॥

दीदी भुली नैरणई, कोट पैंट तंग।
लौंड मौंड देखी बेर, छेड़ी दीनी जंग॥
हमरा छ पुत्र हैंगी हीरो चुई कट
येको चोड़ी हीरोइन, देखी लिया सब॥
सांची बात नकी लागें, मीठी हैं फरेब।
गर्दा लै नी पैरीं कमें, पैजाम अरेब॥
कोई अंगरेज स्येणी, देखी छ तुमलै।
पैरिया घागर साड़ी, कै दिया में थैं लै॥
भारता का नर नारी, अकल पत्थर।
पड़ी गया बिन सोची, करनी नकल॥
नकल लै भयो हम सब बरबाद।
आजी लै सुधारि लिया आपकी औलाद॥

संक्रामक चाय

पढ़िया हो पढनेर, सुखिया सयांण।
कसि हैं चहा चहा, आज का जमाना॥
बुड़ बाड़ी पुराणा जो, करला बिचार।
दैली बटि कस हैंछी, दै दूदै बहार॥
बखत बज्योंण हैंगो, कै का घर जवा।
चहा पिया सब कौनी, क्वे नी कन खवा॥
बामण ठाकुर सब, बजार बणियां।
हरिजन साधु सन्त, सब मांगणियां॥

घर बाख खेत पात, राज दरबार ।
चहा पियां चहा दिया, हैं बराबर ॥
तीरथ बरतों मजी, और बांकी पानी ।
मुरदा का घाट लग, चहा पके लिनी ॥
सब जागा सभाओं में, पैली हूं बीचार ।
कसी होली आयोजन, चहा पायीं थार ॥
नान घा ठुल घर देहात शहर ।
नैनीताल नाव में लै, चहा क होटल ॥
नैनीताल आफी लै रौं, अल्मोड़ा जावा ।
नौ दुकान और चीज, सौ दुकान चहा ॥
नैनीताल अलम्बाड़ा, पिथौरा का गढ़ ।
सबै जागा गिलासों में है रे खड़ बड़ ॥
गढ़ ल टिहरी को मिली जिला पौड़ी ।
चहा की कितली वां हूँ, पैदल गे दौड़ी ॥
जी ऐपो की गाड़ी मज, उतरे की काशी ।
उँड़ कुण पाकणा े चहा ताजी ताजी ॥
कुमायूं मन्डला छोड़ा, उत्तर प्रदेश ।
सबै भुमी भारता की चहा लै लपेट ॥

सर्वत्र चाय

भाल कामा दिनी जसी, गणेश की पूजा ।
सबन हैं पैली हैंछ, उस हैगो चहा ॥
जब जब जबौनी जो, जती जती चूली ।
बरखा पैलिक चहा, तब बात होली ॥

कीतकी ऊमको जब, तब और काम ।
नी मिलो कै कभी जब, बड़ बदनाम ।।
औनेर बानेर जब, कै का अखा दर ।
खाब पीब अस होलो, चहा भर फर ।।
कुशल पूछल नैली, चहा पाणी हुंणी ।
है तुणीख केछ कौनी, ऐसी हैंगे बाणी ।।
नान भाऊ रिसै जांछ, नी मिली कटक
टुली चेली आई जैछ ब्याल लीई भट

चवरे की चूरी लग, हाथ लमकाई ।
न्या-न्या कैछ द्वि दिनमा भेली की सफाई ।।
ब्या की ब्योली घर आई नैली चेंछ चहा ।
सासु कैछ हमरी य, ब्वारी बड़ो बेहा ।।
बामण ज्यू जब औनी, पड़ना सू पाठ ।
बिन चहा नी छोड़ना, जोशीं ज्यू लै खाट ।।
डूगरी दा डगरिया, पर ब्वानी माला
गुमनियां गंथातुवा उनरे छ साथा

खाट भात परथा घर, नी पचनो कौनी ।
यक टैम यक सेर, आंख बुजी पीनीं ।।
शेर सिंह सवं सेठ, द्वि छन सैणिया ।
बड़ी जानी चहा लिजी, सांकें भै बैणिया ।।
हरीराम मजूरी माँ, बांई बार्नी हौव ।
जै का घर तनु मिलौ, टुल गूडो हौव ।।

बाल दत्त अनपढ़, सार गौ का गबावा ।
ॐ ले तब स्वैनी गौरू, जब प्यवै चहा ॥
पीताम्बर परिहज्यू जो, स्कुल पढ़ौनी ।
दूद चैंछ चहा हुंणी नना कैं दौड़ानी ।
पटवारी पेशकारा, चिट्ठी जो दी जानी ।
पतरौल बाट घाटै, चहा ख्याओ कौनी ॥
को अप्रेंटी वाला कौनी, मथ मिली जवा ॥
कम ख्शाज हुणें गाड़ी, चहा पका खवा ॥

विकासा का लोग मव त्रिकास करनी ।
चहा चीनी दूदा डावा भवलै मैं धरनी ॥
परिवार नियोजन, जो छै करनेर ।
समझौणा लागी रई, चहा प्यवै बेर ॥
कन्ट्रोलक्की दुकानमा मीड़ अथाकसी ।
चाह पांणी बात करा सेल मैन खुशीं ॥
नान-नान डांक खांग, जती-जती रवाला ।
चहा पिया पैंली तब पोस्टकार्ड ख्यला ॥

बीमार कवे हैई जांछ देहात शहर ।
बिन चहा अस्पताली, रिसै जां म्हेतर ॥
स्टेशन मोटरों का मांगा घौं टीकट ।
बाब सैप सुणनैं नैं चहा नी दी जब ॥
चहा कैं पचौना हुंणी फिर चहा चैंछ ।
जेब मां टीकट धरा बारी आफी ऐंछ ॥

मोटरों का ड्राइवर, जती-तनी गाड़ी ।
करी दीनी मनमानी दुकानों में ठाड़ी ॥
नी देखना ऊँ लै कैसी अबेर - मबेर ।
आपणा चाहा का हैम बणी जानी शेर
घरों बटी खाई बेर म्हैंनम मजूरी ।
करना छूँ कतु जानी रोज स्यण झुरी ॥
उधार पी औनो चहा औण जांछ नफ
बिसकुट पप खस्ता गपकौनो टप

मटी पलेट कौंनी हाफ दिया आजी ।
पकौड़ी कैं खाई दिनों कतु दिना बासी ॥
मिठाई सड़ियां खाना नमकीनै थैलि ।
भूली जानी घर बार, सेंणी चपला-चोली ॥
दस आना बार आना जुड़ी जांछ डेढ़ ।
द्वि ढाई लै हैजां कै-कै कै, कै रुपैं एक ॥
हिसाब मिलणा दिन कवे त लुकी जानी
कै की है ? दुकानवा मैं बुवा की गाली

दौरा मजी जथ जानी ठुला सैप लोग ।
हर जागा हर घड़ी चाहा छौं भोग ।
कैंई जवा औफिसों में अफसर बाबू ।
चौकीदार चपरासी सब चाहा ताबू ।
नेता लोग घरी बेर, कान मजी हात ।
चुपचाप पटै दिनी, चाहा पांणी बात ॥

चुनाव बखत दुसा कभी हैं बाहर ।
खुले आम टयाक छुनी चाहा की दुकान ॥
नी पीणियां लग देखा, सैकड़ों में एक ।
काली मिर्च खांता कौनी पत्ती क परहेज ।
येमो कवा हैई ? छ चाहा का लीजिया ।
कतु आगा सम्राप्त चाहा का मरीया ॥

अमृतमय चाय

कमाई - धमाई भई, सबूँ की चौपट ।
भुटि गाची जसी करी, चहा टर टप ॥
खाट मात और चीज लगना हीसाब ।
सालकि छै म्हैंणों कवै, चहाई में साफ ॥
चहा कि कम्पनी वाला, बड़ा छें होश्यार ।
आदिमों का हियाब लै, माल छ तय्यार ॥
उदी दा की बूमी गेछ, गै - गैछ बुड़िया ।
बौंठी टेकी उ लै ली एँ चहा की पुड़िया ॥
अच्छा लै छटाक छना, कमाटग छैं पौण्ड ।
महवारी कमाई को, चहा संग बौन्ड ॥
दस बीस रुपें तक, साधारण घर ।
औनेर जानेर कड़ी, है जांछ करज ॥
पधानों की ओ छै गेछ, तबी लै द्वि चार ।
आई जानी गप बाज, चहा पींणी यार ॥
सभापति सरपंचों घर है रौ धुरा ।
म्हैंणा भजी लागी जानी, पचास हो पूरा ॥

के करनी बद लोभ, हैई गैळ खुब ।
नौकर चाकर बीनी चहा नाम घुस ॥
मखेश की गञ बजा, चहा का लीजिया ।
घर बाना समजौंछ, चहा भ्रुन पीया ॥
गमलाले तनखा छ स्वाली कौं गों कौं गों ।
चहा का लीजिया तौ ले गेञ मरा दौड़ों ॥
फिर क्यों दिनभगी भोरी कवा घस्वा ।
सांची झूठी कैई बेर कतु लोग ठगा ॥

रुपुवा का बर हैरी खाणा का बगंखा ।
घरवाली नी माननी चहा गया-गया
के कारछ रुपुवा कै, लागी गया शोर ।
दुकानमा पकड़ी गौ भई गया चोर-चोर ॥
मखिया ले दूद बेचों अनाड़ी बन्दूक ।
दूद मजी पाँणी नी मै पाँणी मजा दूद ॥
दयाराम दै बेचैनी नना मुख मारी ।
पोरे बेरी चहा ऋण ऐल साला तारी ॥

ह्यों बेचनी भल-भल गंगा दत्त दाणीं ।
मांथो-मांथीं ह्यों देखौनी, ताव आदू पांणी ॥
नितुवा कौ थक भैंसा, रोज मरा कुन्दा ।
घोटी दीछ मिलै बेर पीनाऊ छैं ठंडा ॥
तै का बाबा और छिया पुराणा उस्ताद ।
कुन्द मजी न्यसै दिछी मादिर क भात ॥

जगुवे की हीर्री भली दूदे की मलाई ।
गाडी वेर रुपों बेचेंछ म्हैंस क चौथाई ।।
धिनाई न्है गेछ सब चहा का बजार ।
वाँ वटिक चहा रुपया नान लग मार ।।
कां तक लेखनु चहा बड़ इतिहास ।
पटौगा में सबन की आई गेछ बास ।।
भैरविया लागी रौछ भैंसी रुजगार ।
चहा प्यपै दुदिया कैं रड़े रांछ यार ।।

मधिया लै मजबुरी सड़क में गयो ।
मजुरी करया जब तब चहा प्यपो ।।
घुरसींड़ घा बेचनीं ठाड़ ठाड़ लुटा ।
थान सौंड़ थुपुड़ी में दस पांच मुठा ।।
लुटा भयैं कट्वासी छ, भीतेर सड़ीया ।
थुपुरी का पेटपन, गोठ क गाड़िया ।।
मोल तोल हुनैं रौछ दैली देखी लिया ।
पछिन की बात नकी कौछ खड़किया ।।

लीनेर का मन मजी, जमें जा विश्वास ।
गढवा कें गयों जब, लीणियां ऊदास ।।
लकड़ा बेचणियां लै, ये चहा लैं मार ।
यक बोजी लाकड़े की, बड़े दिनी चार ।।
जै हो चहा पाणी तेरी, जै हो महाराणी ।
कीतणी जी रौंन त्यारा नाती प्वथा ब्वारी ।

तमाकू कैं बेचखी ले, माल मैंस याम ।
बजारे की तमाकू में आदुक जै माट ॥
कुटी काटी मिलैं दिनो, जाड़ दुका पात
गौं नौं की पहाड़ी में ल, चतुरिया दाद ॥
घनानन्द घटवाला, के मली छ बाँमी
पीसिया कैं चोरी बेर, चहा पिया कौनी ॥
माल गौं का गोपो ददा है रई घोड़िया ।
बाट–बाते करो दिनी, आदुक बोरिया ॥

शेरसिंह मोकारा का, सात छन पूत ।
पच्चीसों कैं काटी लीनी दिनै ताक सूद ॥
सुदुवा सुनार मैरो, दुकान छजाई ।
सुन चाँदी आदु गप कपट मिलाई ॥
लुरिया लुवार दूखया, कसी खेलों चाल ।
दातुली मैं लगै दीछ, कुटई क टाल ॥
दौलराम दरजी का, सब बाटा चाँदी ।
फिर लै लूकुड़ जै का, सिणा वा में खै दी ॥

बलराम बढ़ई कैं, भली इनकम ।
तब लग चहा हुंणा, पड़ी जाछ कम ॥
बेतराम बेड़ी जब, बांस ली जां मोल ।
रुपै एक कम हेगा, दयुल वै जां मोल ॥
घर आया मेहमानों, जेब चां परिया ।
नान दाज्यू ठुली बौजी, चहा को कजिया ॥

लागी हवा हर कन, मन लैंणा- लैण ।
नक भल नी सोचना, चहा, हुंणा चैन ॥
शिव दत्त यथा उथा, सटर पटर ।
करो बेर कपै कोनी, दस बीस भट ।
चलैं लिनी तसीकै तौं, चहा पांणी मली ।
माल मैंस जनता कैं, यसौं हूँ हमरी ॥
अनदेव अदालत भूटि गबहै दिनी ।
औण ताक चहा चीनी गूड़ बादी कौनी ॥
सब बाट लागी रई, भपोड़ा–भपोड़ा ।
मन - मनै सब कौनो, चहा क लपोड़ ॥
गौरी दत्त गल्ल वाल, बीसिया बेचनी ।
यक बोरी गयोंनों मजी, द्वि बोरी काढ़नी ॥
पूरिये की पाचूने, दुकाना के मली ।
तराजू का ताव बटी, डामरे की टली ॥
हिरी सौज्यू, कपाड़िया, मेल लिया सब ।
मीटर छ देखूं हुंणी नापण हूं गज ॥
मैलैं कय जब सौज्यू, तौं के छन हाल ।
भूलि गयों अरे कौनी, बैठा चहा प्याला ॥
मरचा को रुजगार, दस पांच डाली ।
मरचिया करनी जो, मिलै दिनी काची ॥
कूँ लै कौनीं कां वै औंछ, चाहा पांणी खर्च ।
नि करना जब यस, बाट हूँछ कर्ज ॥

अतुक कमौंखा लैरी, सब रुजगारो ।
ईमान जुबान छुटी, चहा की बीमारी ।।
धरम करम मब, भरम छ भया ।
अमरित मय है ं' यो बज्यूणी चहा ।।
सब ऐप चहा पार, यो बड़ो बेमान ।
बे शरम नी गुरु य, भूत छ मसांण ।।
झाड़ फूक करी बेर, हैई जानी भल ।
नी छूटन कसी कै य, नीगुरी क चपल ।।

विकृत चाय

चहा बण चहा जप, हुनो तब ठीक ।
सारै दुख योई भयो, बिगड़ो गे लीक ।
चहा वाल होटलों लै, कस नाम धर ।
भ्यैर बटी बोट लगै, जलपान घर ।।
जलपान उती हुंछ, जै थैं कौंनी प्याऊ ।
चमकी री चहा वाल, सुंणी लैरै भाऊ ।।
ऐलै बेर चहा धरो, आघिना का साल ।
कर्गी बेर कतु ऐप, जोड़ी दिनी माल ।।
भ्यैर बटी मड़ो मजा, पिरफ झितली ।
भीतेर - भीतेर द्यखा, जुड़ी गीं हवेली ।।
सीमन्टेड कोठो छना, छत माँ लिन्टर ।
चहा की कीतली भाई करी दीं मन्तर ।

श्री राम मन्दिर का पन्थ ज्यू पुजारी ।
नाना जब मौत भया, सोची दिकदारी ॥
छोड़ी गया घर बार, छोड़ी घरवाली ।
घणीं - जोर जेलै मिल, पी ऊँछ उमाली ॥

तुलाराम सेट ज्यू का, ममदि गरीब ।
ब्यारी कैं पूजौंणा गया, हरेवा नजीक ॥
चाहा पत्ती नो मैं जब, भट–पटा भई ।
उमाली दी मेथी पांणी, इज्जत बचाई ।

सुरिया कैं देखि लिया कस छ स्यू किया ।
चाहा पत्ती बदला मैं, बनाइ भूटिया ।
सुबिया की इजा कैंछ, को लागी रौं मांणी ।
भट-पट गाड़ी दीछ, अध्यार्णी को पांणी ॥

तै की मामी देखी मैंलै, औंछी छ भगत ।
राती ब्याल पूजा करी, धूप दीछ बात ।
तुलसी का थाना मजी, रोज साजी पांणीं ।
चाहा छुन तुलसी कै, पात खैं उमालो ।

तरिया क भैंस ब्याल, द्वि महैंणा छैं आजी ।
घरवाली जरा तेज करैं मन मानीं ॥
नी पिनो कै टर्र पांणी, के करछा धौं ।
रिसैं बेर खीति दीछ, डालडा को घ्यों ।

हँस मुख आदतै की, पड़ौस की बूब ।
भल छना भला बायो, लिय दिय खूब ।

अबा बैठा मबुँ हूँ बैं, आजी लै बुढ़िया ।
मैंसे ज्योबी डाबा लागी, गौत अब पीया ।
औरों की के कनू सुँणा म्यरै छिया काका ।
काली मरचा झोवा हुँणी कौन छिया चाहा ।
यक दिन मैंलै दियो, लागी गयो फांक ।
द्वि घुटुकै मजो म्यरा, ठाड लै गैं आंख ।।

माधि पुन्यों परबा का, दिन कथा भजो ।
एँ ल साला लग करी, पधान ज्यू हरी ।।
सौ एक खानेर छिया, अबबला भई ।
चहा तौली चीनी जागा सूजी पड़ी गई ।।
बाबादी बचै गया, अकल सयांणी ।
चीनी खिती में फिर, पीई गया छांडी ।।
सूजी गई फोकट में, चीनीं बरबाद ।
तै कै लग कतु पींगैं, सडै द्वि गिलास ।।

सुदामा बामण ज्यू लैं, छिन्न पत्र लेखा ।
रातिये की पाकी चाहा, ब्याल पींण देखा ।।
मनीराम पाण्डे ज्यू क, जंगल क ध्याक ।
सीतण वखत ऊँ लै चाहा पींण द्याख ।।
बीलाबर बैद ज्यू लैं, जो दवाई दींनीं ।
अनुपान चाहा पांणी, समझैई जानी ।।
डाक्टर ठुला मैंस कतु रोगों मजा ।
के हरजनी हो कौनीं, दिलै जानी चाहा ।।

हरी कृष्ण घर गया, श्री कृष्ण पौंछ ।
चहा का गीलास मत्री, भुडरी क कौंछ ॥
के करँछी मैं लै छिय, बीचम बेठिया ।
प्यारा हाता गिलास में सिडाख लागिया ॥
पिन त कसीक रिन, ढोवना आफत ।
किसना का गिलास में, माँख पड़ो झट ॥
मांख पर पड़ी जब किसनै नजर ।
टूवा-टूवा ये चहा कैं, पड़ि जौ बज्जर ॥
झट-पट किसनै ले, प्यारा छु गिलास ।
आज वै एँ क्वार कसौ, भीं बटि कैलाश ॥
तै का ख्वारा माथी पड़ी, तौ गरम चहा ।
खीसै गया सब जाणी, नाह एक भया ॥
नरदेव अधरिया भावरा का साजी ।
गांठी जसा शरीराका, ख्वार पर टांकी ॥
चहा सुणी टपकौन, टप - टप लार ।
चहाई में खीति खानी, भावरी शराब ॥

व्यक्तिगत हानि

देखी किया सुणी लिया, यो चहा बीमारी ।
टिकराम टी. बी. मैछ, ज्वान घरवाली ॥
के करंछी अबला हो, नान भया चार ।
हात खुटा सब क लैं, बेची दी बजार ॥
भाल नी मैं टिकराम, जमीन गोशिवी ।
घरी बेर जांण पड़ो, भवाली सेन्ठोरी ॥

तीन चार म्हैंण तक, उती पड़ी रया ।
घर आई द्वि दिनमा, आपू मरी गया ।।
लछिया की चेली लीला, छै म्हैंणा की भई ।
चहा चुस भरी सैंणी, म्यार हुंणी गई ।।
खेल लागो नानो भाऊ, कौतलो फरिक ।
लीला जली हाय रामा, है गे पड़-पड़ो ।।
धनीराम लागो रयो धातु चीण रोग ।
बेर-बेर जनैं रौनी कौं खाड़ी का ओट ।।
गेलुवा का बाब मरा पिसाब है बन्द
ननदिया लग करौ ये चहा लै ठन्ड ।
उदियै की घरवाली गौंई भजा मैंत ।
चहा पींछ द्वि लगा को प्रदर छ श्वेत ।।
कमला कीं सौत लग नी माननी आब ।
श्वास चाली जांछ जब करें धक - धक ।।
परिये की कुड़ी पना चहा क झगड़ ।
तु छोड़ मैं छोड़ों मजी सैंणी मैंस लड़ ।।
परिया कें रीस उठी लाकड़ उठाय ।
सैंणी स्यका डाट-भाट आंख फुटी गय ।।
दामोदर लागी गैछ दाँतों क मरज ।
दतिया छ बादी कौनी मीरि में सरक ।।
डमियां का दांत झड़ा उमर पच्चीस ।
खांण-पींण भेद हैरौ बड़ी लागें टीस ।।

नान भाऊ बोपिया का टूटा दाँत छन ।
पीड़ हैंगे उलै कौंछ रुन - रुनै रुना ॥
इड़कै जाँ उलै चहा यक ज्याल भरी ।
तै की बैंणी पूसा म्हैंणा चहा मड़ी मरी ॥
दनी दा की सैंणी भेळ, चहा लै खराब ।
उठी रीस दनीदा कैं, कर्री दी सराद ॥
आई गयो निरंकार, सैंणी का आंगमा ।
ज्यौड़ लगै फांसी खैदी, धुरी का वांसमा ॥

कतु जागा करी येलै, यारी मजा रुग्गारी ।
रिसै गया जरा सा में, चारु चन्द्र रयाड़ी ॥
पुर्षोतम पायडे ज्यू लै, कतुक मनाया ।
नी माना जनम भरी, अबोल रै गया ॥
नौरताँ में रामलीला, देखण गे तारी ।
सोहाग जेवर सब, पैरी बेर साड़ी ॥
मैत चेलो चहा पींण, न्हैई गेई भट ।
दुकान मा जसै बैठी, ग्यस बुझो भप ॥

गळ में को गुलोबन्द तीन त्वाळा साफ ।
मार पड़ी मालिके की, बाबु आया याद ॥
कां लै कौनू औरीं हैगे, ये चहा का हाल ।
कतु जागा हैई गयीं, सैंणी मैंस न्यार ॥
सबूं है नरैणे बौजी, बड़ो छ यू आत ।
चहा नाम पर खैं दी, दकमोड़ी पात ॥

होली मज्जा ननदै लै, लाल रंग खोई ।
उमाली दी दियी वी कैं, जो बर्जौणा होई ।।
हरी बाबू सीद मैस, चहा हुंणी चिनी ।
न्यौंण गया सुसैटी में, भीड़ खेंचा तानी ।।
ठाड़ भया लैन पार, जेब कटै गया ।
घांक लाग भीड़ मज्ञी खुटा टोड़ी न्यया ।।
हमरी मोहने ईजा, हे गे अट् बूढ़ी ।
चहा मज्ञ बगे कयो, उलटौं कै खड़ी ।।
मोहना का बाबु हुणी कस भल कौंछा ।
बिन बाते सबै बाक तुम चमकौंछा ।।
चहा को चाकर हाज्यू चहा लै चमकाया ।
मांडी-जांडी करण में कतु ठगी गया ।।
चहा न्याई मज्ञी बाना देखनेगीं हुंणी ।
न्या करी वै न्योल्नी देखी मु ख जस गुणी ।।
बचिया का न्या का दिन रधिया रस्यार ।
खीमिया कैं देखी ऊ कीं पैली वटि खार ।।
बरयाता का औंण टैम खीमियो कैं चहा ।
रधिया लै नी दी जब कसी हैगे अहा ।।
खड़ी मयो खीमीं अब बीका बावा आया ।
चार पांच बीका बड़ा और उठि गया ।।
जान जानै खाणा हुंणी बात बड़ी गई ।
रसोई बेकार न्हैगे बदनामी भई ।।

राती ब्याब द्वार खोल ओ दुल्हैंणी उठ ।
सौर ज्यू श्रोडर लागो चहा धर सुख ।
सौर ज्यू को बात सु'णी सासु लै बोलाणी ।
आग लागो ते चहा कैं हवै ओ दुल्हैंणीं ॥
आई जानो ऐल तक, पांणी पात गोठ ।
बाछी क हू-डाट सुँण, किलै छै बेहोश ॥
शरम नै लाज त्वकैं, है गुछ धू परो ।
देखी ने की भली-२, कसी ख्वार पड़ी ॥
तुम सासु भौत भला, ब्वारी लै बोलाणी ।
यस धमकौंछा जस, नौकर हू नेली ॥
चहा पत्ती बेली बटी, न्हैंतै मैंल कय ।
गूड़ चीनी पोरू' बटी, आजीं लै नी आय ॥
तुम छा सयाँण म्यरा, इन्तजाम बाबा ।
आपणा बगस लुकै, गूड़ चीनी डाबा ॥
कैं कणी देखौंछा शान, उनरी कमाई ।
कस जस समजछा, मैं छयोड़ी मी आई ॥
तखुकी-भुणुकी भई, बड़ी गो झगड़ा ।
चहा की दहा लै राती, सासु ब्वारी लड़ा ॥
चहा त चैंइये रय, खांण क लै बर्त ।
सासु लुछैं ख्वार बाव, ब्वारी वर्गों भर्त ॥
ताल खेत बटी कैंछ, लगै बेर धाद ।
विमला की कैंजा दीदी के मैं आज बात ॥

ख्यतमा अबेर अया, कति बैंठी गया ।
मडुवा कें आग लागो, नी गोडिन भया ॥

बेली ब्याल हमरा छं, घर आई रई ।
चहा-चहा-चहा कौनी, त अबेर भई ॥
राधिके की काखी कैंछ, जस्सै मै तय्यार ।
तीन चार मैंस ऐगी, चाख मजा भ्यार ॥
करण पड़ीगो फिर, चहा को बबाल ।
आग लाग ये चहा के, बड़ छ खराब ॥
जुठ लगै सक जसै, सबूं लै वैं चहा ।
तसै फिर आई गया, पुषुली का बबा ॥
आजी घर फिर चहा, कै दिय ऊंनूल ।
मली बटी होरि अया, उमापति टूल ॥
उठी बटी छै बखरै, चहा बड़ै हाली ।
भेटणा सूं तसै ऐगे, तुमरा लै बाली ॥

येसी रीस उठी मांणी, के कौनू कै देर ।
हाते की कुटइ धरी, भीं में तीन बेर ।
सेर भगी चीनी हैगे, बेलि बटि साफ ।
लुकैइया मेरी छी जो, टांणा मजा मांथ ॥
जंगला का किलमोड़ा, कै लै आई दासा ।
ओली-छाली छिकलों का दस-पांच ब्वाजा ।
केशब की घरवाली ल्याई पोरे देर ।
ओ दिली छी चहा छोम, पुरी मरी भेव ॥

केशव ले न्हैई गय, वी दिन बाजार ।
बगल बेचण हुंणी, गत भै खराब ॥
गौं वलां कैं पड़ी गई, बड़ी दिक्कदारी ।
पंचनाम चौथ दिन, आयो पटवारी ॥
मानसिंह ठाकुर लै, इनरौ ली टयाक ।
मिलै दिया बगलों में गेज्याड़ू का गांठ ॥
फोकटे की कमै संग, जेबे की न्है गई ।
चोर ली गै रात मजी, अणकसी भई ॥
यस हैरौ चहा रोग, येसी छ खबर ।
खान पिन घरा का लै चहा चहा मर ॥
हाम मरा मरी गया, नाना कैं बचबा ।
दूद बेची चहा औंछ, कस भैं गजबा ॥
सबूं की अकल फैगे, चहा की कीतेली ।
दूदे की भयैइ कुंणा दै को पूछौं चेली ।
छां देखणा स्वीणा हैगे, ये जमान आब ।
क्वोई भात क्यैक खानी, नीमुवा को काप ॥
छसिया कसिक पाकौं, सबूं गुणकारी ।
भटी जौल थपोड़ पै, हैगो कौनो बादी ॥
नौंणी ब्याला फूटी गया, दै की ठेकी सूका ।
देखी लिया तनु मजी, ब्यांण लै री मूणा ॥

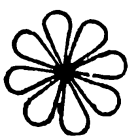

सामाजिक हानि

समाजकि एकता में, छुवाछूत नकी ।
ऊंच नीच सब एक, मनुष्य की जाति ॥
सरकारी कानून यो, भौत पैंली पास ।
अंधा धर्म ठेकेदार, कई छैं उदास ॥
जाड़ों दिन दुकानमा भट्टी थैं बैठिया ।
पधानज्यू का हात चहा, स्वार ऐ कइया ॥
भीजनै भीजनै घो में, आग लाग प्यार ।
पधानज्यू का ढिग भै गै नि रय के ख्याल ॥
ताती चहा ताती भट्टी, पधानज्यू लै ताता ।
द्वि झांपड़ ठोकी दिया, बिन पूछी बाता ॥
कई या कैं कालो रीस, उठी पड़ी भारी ।
भट्टी क लाकड़ टिपी, ख्वारा लै दी मारी ॥
बजारे की बात छी यो, भ्यव जुड़ी गयो ।
द्विऐ जांणी पुलिस क, दरोगा ली गयो ॥
सलाम सलाम करी, थांण में जै बेर ।
द्विनों लै हन्टर खाया, रुपै गया तेर ॥
चहा नाम पर हुनी, बड़ा बड़ा ऐब ।
देखी बेर सुणी बेर, लागीं जैंछ झैंप ॥
दिनभरी दुकानमा, मैं छियो बैठिया ।
सावणी में चहा बेचैं हुसी ये लौंडिया ॥
चहा बेची-बेची बेर, हैगे ठेकेदारी ।
नानी ठुली कतु आया, सबूं संग यारी ॥

दस पांच साल भजा, औरी कावा हैगे।
चिमुवे की दुकानमा, देखी अब भैगे॥
चहा ले बे हया करो, भल झी अनोपी।
घर बटि भाव गयो, बां दुकान खोली।
चहा पांणी के चलेंछो, माबर खराब।
हैई गयो शौंबस लै, सीकी ली शराब॥
नक भल ज्ञान गयो, मीठो लागो चोरी।
चोरों का दगाड़ वी लै, धरम लै छोड़ी॥
यक दिन मैंले देख, अदाबते भ्यार।
हथमेड़ी लागीया छो, चुटिया ले साफ॥
अतरिया मङडिया, श्री मीम सिंह।
कितली लै न्हेतें भली, गिलास छैं तीन॥
चहा की दुकान खोली, बाट मजा भैरी।
लौंड जब स्कूल बै, घर हुँणी औनी॥
चिलम बड़ौनी तब, मीमसिंह भली।
उठवा-उठवा कौनी, जोर-जोरे कली॥
चार आना आठ आना, जो अतुक लेक।
झाड़ी लीनी सीख दीनी, अतरे लै फैद॥
बहकाया सब लौंड, होइ गया पाजी।
दम लगै बेर खेली, पोखरे की बाजी॥
खरचा कैं दिन-दिनैं मैं बुबां क तेल।
निकलिगों साल भरी, नान सब फेल॥
मनुखी का बाब देखा लखपति बना।
चहा का मीलास आओ, नी छोड़ बाभण॥

ब्यखा ब्वारी नाति पोथा, ऐस छ आराम ।
क्या हुना ये उमर, परमारथ काम ॥
दिन मान सबुं झुठ, माछनी गीलास ।
अन्यार हैंईया बटो, बेचनी शराब ॥
कसुवां चहा बेचौं, उमर छ साटी ।
ब्याख बाब सैंप छना, घर मजा नाती ॥
झुठ मना माजखियां, के अकल होली ।
चहा की दूकाना ओटा, जुवा रौं छ चली ॥
अमल बज्योड़ हैंजो, सबुं देखा_देखी ।
रखुवा लै कतु दिन, उधार लै पी दी ॥
पुनिये की दुकानमा, लगै यो होसाब ।
झुट सांचा जोड़ी बेंर, रुपयां हजार ॥
पुनियां लै झट दाब, करी दी डीगिरी ।
चेली ब्यवै बुड़ा घर, तब पती धरी ॥
बुड़ मैंस कफ रोगी सालै में गे धरी ।
चेलो ए गे मैता मजी, अणकसी करी ॥
विकासा का युग मजी, सबुं क विकासा ।
हुंखा लैरौ कस भल, किलै छा निराश ॥
नौबा-धारा बाटा-घाटा, बखौं गों नहर ।
कयेकों की मौत सुणी, चहा में जहर ॥
बचुली का ब्या का दिन, जो बर्यात आई ।
ढड़ुवा क गुसें मर, दूद ढ़बवौ भाई ॥
फीकी चहा देखी सब, बर्यात रिसाई ।
आदुक बरेती न्हेंगै, रातै हाई–हाई ॥

बल्यू बिमड़ी गया, वो मनौंख हया ।
दुरगौंख करी बटी, सौराम नी गया ॥
बाने की छुट्टा चेली, के भल स्वभाव ।
बी.ए. पास बर ज्यू की अकला में काव ॥
एम०ए० पास करी छन, विद्याधर जोशी ।
चहा की दुकान खोली, नौकरी कें छोड़ी ॥
यस छ ईलम आज, देखी बेर शोर ।
रात मजी बाट करा, माल क्योनी चोर ॥

सब चुप

आपणां भारता मजी, आपणी सरकार ।
आपणा-आपणा थैं हूँ, कौंण लैं बेकार ॥
सरकार लैं करण छ, देश क वीकास ।
नान तिना सैंणी मैंस, जो जथा के जांछ ॥
किलक करली ँ लै, ये पर वीचार ।
संबंध बिगड़ीं जाला ऊ लै कौली भ्यार ॥
पूछि ल्यला जब कोई, दिगागे खराबी ।
कै.ई देली झट-पट, आँकड़ा बताबी ॥
हजारों की संख्या मजीं, आदिम रुजगार ।
लागी रई चहा पार, और हर साल ॥
लाखों रुपैं विदेशों की, पूजीं ऐंछ येतो ।
दुणियां में भल चहा, भारते की खेती ॥
कौलेजा का लौंड सिर्फ, करला हड़ताल ।
किलक कीमत बढ़ें, चहा हर साल ॥

प्राध्यापक लोग तब, करला अन-शन ।
कसिक पड़ोनू हाम, लौंड चहा संग ॥

राजनीति लग नी रौ, तब चुप बैठी ।
सबू हैं आधिन कौका, दल साम्यवादी ॥

जनसंघी लग तब, करला हो हल्ला ।
चहा मेज नी है जाणो, समझौत शिम्ला ॥

इण्डीकेट सिण्डिकेट, कांग्रेसी लड़ी ।
गांधीवादी द्विये छना यककैं छिया पैली ॥

के हुणी सोचला लौं लै, अहिसक वादी ।
बाकर क दूद पीछी, महातमा गांधी ॥

सोसलिस्ट पार्टी वाला धार मजा भैरीं ।
आफीं रौंछ जस हुँछ, ऊँ लै मौक चै रीं ॥

इनू है जो बांकी छना, अगड़-बगड़ ।
आज यथां मोल उथां, चहा क दगड़ ॥

अरथशास्त्रियों कैं अरथ को गम ।
लौं लै कौनीं देश मजी पूंजी है रै कम ॥

दार्शनिक दरसना, लेखणा में छन ।
दरसन करी सब लगैं बेर मन ॥

बुद्धिजीवी लेखकों को, ध्यान जांणो कती ।
लागी रौछ लेखणा में येसीं कवा मजी ॥

समाजका सुधारक, परेशान छन ।
दौड़ धूप माशणों वैं समया न्है तन ॥

अखबार डेली और सब माहवारी ।
साप्ताहिक सम्पादक चुप छना भाई ॥

को सोचलो की सुणाल शरीरा विज्ञानी ।
सोचनै-सोचनै ऊँ लै म्यार हुंणी चानी ॥

सरकारी नौकरों कैं के ऐरै आफत ।
उनू कैंत पैस चैनी खट-खटा-खट ॥

डाक्टर ऐलो पैथी सिविल सर्जन ।
किलैक घटौनी उँलै आपणी इनकम ॥

बैद लोग लागी रईं दवाई छाड़न ।
घोट-घाट करी बेर पावणा छैं नान ॥

सूद खोर सौकार जो सोचला ऊँ तब ।
गरीबों की होइ जाली जब भली पट ॥

संत लोग सब चीज समया आधीन ।
बतै बेर चुप छना ईश्वरा में लीन ॥

वयलक सोचला सब चहा पिया गोल ।
जानू कौनी सबै आब माथि चन्द्र लोक ॥

मेरी बात येसी भई मन में धरिया ।
नक जन माना कोई क्षमा लै करिया ॥

सब लोग चुप छना मैं नी रैई सक ।
चहा-चहा देखीं सुँणी कव मव लाग ॥

प्रकथन

पूरी भई किताब यो, जो पढ़ी तू भू लै ।
विनती छ योई मेरी, सोचण सबूँ लै ॥

खाली पढ़ी के नीं हुनो, गुणना पड़लो ।
तब उस करी किया, जस मन होलो ॥

मैं नी कन कैंई थैले चाहा छोड़ी दिया ।
कुछ बात जरूरी छैं थोड़ी सोची लिया ॥
सोचा-सोचा सब सोचा सोचा हो होश्यार ।
कसी होलो यसा मजी देश का उद्धार ॥

सैंणी मैंस नना ठुला संसथा सरकार ।
बुद्धि मान श्री मान हरेक जबान ॥
चाहा गुंण दोष सब नको भली हानि ।
आमद-खरचा और मरज हो ज्ञानी ॥
बखत कूबखत को और दिया ध्यान ।
कसा हैरी नाना तिना कसी छ संतान ॥
जुठ पिठ सन भन तन मन धन ।
अदली बदली जानी कतु जाग भान ॥

झगड़ फीसाद और मन क मूटाव ।
हैई जांछ बिन बाते चाहा लागो काव ॥
मैंले लेख जतुक लै अनु भवे बात ।
लोग कनी जमाना में चली रैछ आज ॥
जमान नी हुनो भाई ननेकी हैं बात ।
लोटनेर मैं है रौछी ढ्यस त्यर लाग ॥
जमानै कैं दोष दीई आपूँ बरी हुनो ।
बे लगाम मन घ्वड़ा हैई जांछ खुनी ॥

मन का मूखम जब बुद्धि की लगाम ।
लगै लीनी जो सज्जन बणीं जांछ काम ॥
असम्भव दुंणी मजी कबे काम न्हैं तन ।
कठिनाई हैंछ घ्वड़ा मचलंछ मन ॥

सारी बात मन पार यो ई छ सागर ।
लगामै लैं खैंची बेर हैई जां गागर ॥
लगाम जतुक जैकी कसिया हो रौली ।
मन देखी लिया तब हैई जाल तौली ॥

मनै में छ सब आश, मनै मैं नीरास ।
खैंची खांची बड़े लिया, मनै कैं गिलास ॥
बरसों वै थाकीं गया, शिवदत्त भाला ।
चहा छोड़ा लेखीं जानी, ज्योलीकोट वाला ॥

जति-तति बाटा-घाटा ढुंगाँ लै पाथर ।
सफेद-सफेद चिट्ठा, बड़ा का आंखर ॥
अंग्रेजी हिन्दी द्वि एँ, भाषाओं को ज्ञान ।
हात मजा हर घड़ी, लाल रौं नींशांण ॥

तनरि तपसिया को, कवे त करा ख्याल ।
छोड़ा-छोड़ा मजी छोड़, ऊँ नू लै रुजगार ॥
छोड़ी दीछा भलि बात, अन्दाज त करा ।
नी छोड़ी सकना जब, टैम पार धरा ॥

चहा जस चहा पिया, अरे मैंसों भाला ।
चहा नाम पर कयलै, करँछा आल वाला ॥

कयलै पीछा कुमांति को, कयलै पीछा लाल ।
कयलै दीछा न्यौत भागी, घर मजा काल ॥

नक भल जस न्यल, आव हुँछ मौन ।
वे अकल सेवक य, पागल चैं कौंण ॥

पढ़िया सुणिया और, समझिया सार ।
अन्त में सादर मेरी, सबूँ नमस्कार ॥

आरती

ॐ जय श्री चाय हरे ॥टेक॥

जय श्री चाय हरे, प्रभु जय श्री चाय हरे।
भक्त जनन के संकट, सब विधि दूर करे ॥ टेक ॥
जो पीवे जुग जीवे, बनजावें सब काम ॥ प्रभु ॥
भूख नलागे दिन में, नींद न आवे शाम ॥ ओ३म ॥
हर नर हर घर बूढ़े बालक, चाहे होय जवान ॥ प्रभु ॥
महिला आदि सभी पर तुमरी, कृपा हुई मेहमान ॥ओ३म॥
मन्दिर मस्जिद महल कुटी में चाहे हो श्मयशान ॥ प्रभु ॥
सब देहात व शहरन में, तुमरी खुली दुकान ॥ओ३म॥
खाद्य पदार्थ तुच्छ भये सब, तुमरी सेवा महान ॥ प्रभु ॥
सबके मन भावन प्रिय तुम, व्यापक हिन्दुस्तान ॥ओ३म॥
तुमहो पेय पदारथ ऐसा, जैसे अमृत पान ॥ प्रभु ॥
तुमरे सेवक पर नत मस्तक होवें सब बुधिमान ॥ओ३म॥
तुम हो केवल एक तत्व में पर तुमरी छाया ॥ प्रभु ॥
दीख रही सब करमन में, यह अद्भुत माया ॥ओ३म॥
चाय गिलास कपन की, आरति जो कोई गावे ॥ प्रभु ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि ताके, घर में बस जावे ॥ओ३म॥
दीन दयाल महाँ उपकारी, श्रद्धा जाकि रहे ॥ प्रभु ॥
कहै 'सेवक' यह चाय सबन की आशापूर्ण करे ॥ओ३म॥

ॐ जय चाय हरे।

वी० पी० द्वारा हिन्दी की पुस्तकें मंगाइए

…ल चालीसा	५०	रविवार कथा	१)
…ी चालीसा	५०	आरती संग्रह	१)
…व चालीसा	.०	ब्रह्मानन्द भजनावली	३)
शुक्रवार कथा बड़ी	२)	सप्तवार कथा	३)
,, छोटी	१)	रामायण तुलसीकृत बड़ी	४५)
शनिवार कथा	१)	,, गुटका	५)
मंगलवार कथा	१)	,, बाल्मीकी	४०)
बुधवार कथा	१)	सुखसागर	४०)
गुरुवार कथा	१)	महाभारत	४०)
सोमवार कथा	१)	रामलीला नाटक भीमताल	४)
रामलीला नाटक अल्मोड़ा	५)	रैपीडेक्स इंगलिश कोर्स	२१)
गोपाल हरिकीर्तन	२)	स्पीडली इंगलिश कोर्स	२१)
भक्ति सागर बड़ा	६)	फिल्म संगीत बहार	४)
व्रत व त्यौहार	६)	हारमोनियम तबला गाइड	१०)
श्रीमद्भागवत गीता	८)	गोपीचन्द भरथरी सांगीत	१२)
प्राचीन इन्द्रजाल	८)	भक्त पूरनमल सांगीत	१२)
तोता मैना ३२ भाग	१६)	ज्योतिष शास्त्र	८)
,, ,, १६ ,,	८)	घर का वैद्य	६)
अकबर बीरबल विनोद बड़ा	८)	कोक शास्त्र सचित्र	१५)
वशीकरण मंत्र	८)	शेरो शायरी	५)
हिन्दी इंगलिश बोलचाल	७)	हिन्दी इंगलिश लैटर राईटिंग	१)
हिन्दी इंगलिश ग्रामर	७)	हिन्दी इंगलिश टीचर	४)

पाठकों की सुविधा के लिए उपरोक्त पुस्तकें भेजी जाती हैं कृपया आर्डर के साथ दो रु० की डाक टिकटें लिफाफे में डालकर भेजें।

पुस्तकें मंगाने का पता : स्व० कृ० कवि चिन्तामणी पालीवाल द्वारा स्थापित :

कुमाऊनी साहित्य सदन